Vishal

Que स्वेज नहर मार्ग. SUEZ CANAL ROUTE

Ans- स्वेज नहर का बहुत व्यापारिक महत्व है।

निर्माण — स्वेज नहर भूमध्य सागर और लाल सागर के बीच स्थित है। इस प्रकार यह भूमध्य-सागर और लाल सागर को एक-दूसरे से जोड़ती है। इसकी खुदाई 1859 ई० में अलेक्जेंड्रिया में स्थित फ्रांसीसी इतावास के एक इन्जीनियर फर्डिनेण्ड-डि-लेसेप्स के निर्देशन में आरंभ हुई थी। नहर का निर्माण कार्य 10 वर्ष में पूरा हो गया, और 1869 ई० में नहर का उद्घाटन हो गया। इस नहर की लम्बाई 162 km है, औसत चौड़ाई 60 m और गहराई 10 m है। 1956 ये मिस्र सरकार ने इस नहर का राष्ट्रियकरण कर लिया था। 1967 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस राष्ट्रियकरण को सहमति दे दी थी।

Constructed in 1869
Altitude - Sea level
Length - 162 To 168 Km
Depth - 10 m.
Wide - 60 To 65 m.
Tonnage limit -
20,000 Tonnes.

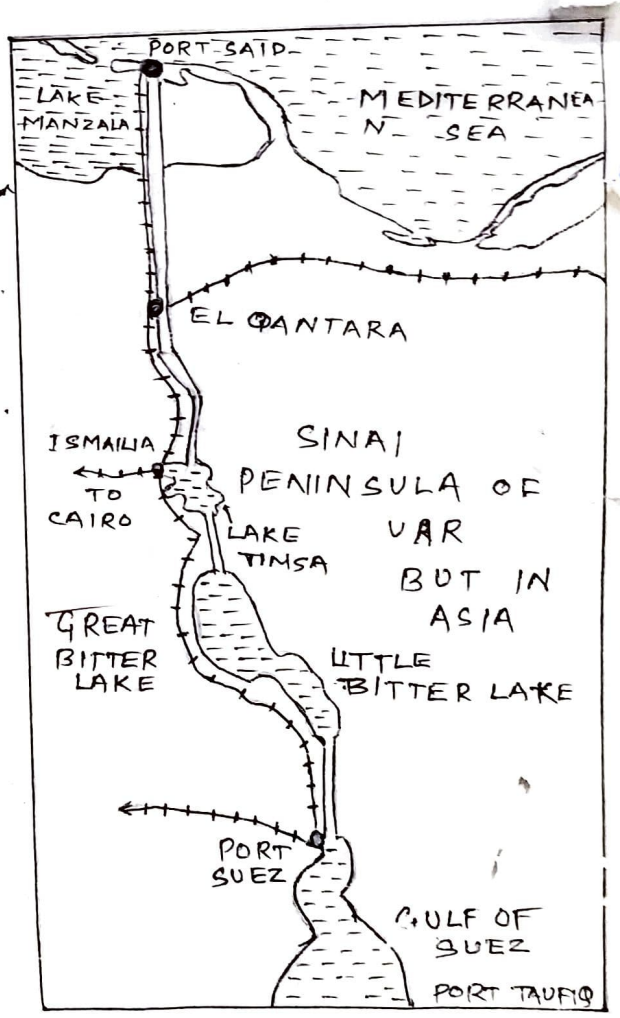

स्वेज नहर के भूमध्य सागरीय तट पर पोर्ट सईद बन्दरगाह है। उसके दक्षिण में यह नहर मैंजाला झील को पार करती हुई अलकन्तारा, अलफिरदान और इस्मालिया नहरी पोताश्रयों तक आने के बाद उसके दक्षिण में स्थित झीलों, ग्रेट बिटर झील और बीटर झील को पार करती है। नहर के दक्षिणी सिरे पर, जहाँ यह लाल सागर से मिलती है, पश्चिम में स्वेज पोर्ट है और पूर्व में पोर्ट तौफिक है। यह नहर चौरस मरुस्थल को पार करती है, इसमें किसी प्रकार के लॉकस की आवश्यकता नहीं है। बिटर झीलों में जहाज रात्रि के समय लंगर डालकर ठहर सकते हैं उसके बाद नहर का अन्तिम भाग बिल्कुल (50 km) सीधा है। इस्मालिया पर एक मीठे पानी की नहर स्वेज से आकर मिलती है।

स्वेज नहर का महत्व —

स्वेज नहर के द्वारा यूरोपीय देशों और भारत, बंगलादेश, इण्डोनेशिया आदि एशियाई देशों के बीच की दूरी कम हो गई है। स्वेज मार्ग द्वारा लिवरपूल से बम्बई तक लगभग 8,000 km, लिवरपूल और योकोहामा के बीच 5,400 km और लिवरपूल तथा सिडनी के बीच 2000 km की बचत हो गई है। इससे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रोत्साहन मिला है, विशेषकर ग्रेट-ब्रिटेन और कॉमनवेल्थ देशों के बीच व्यापार में वृद्धि हुई है।

स्वेज नहर द्वारा व्यापार —

यूरोपियन देशों को जाने वाले व्यापारिक माल में फारस की खाड़ी के देशों से पेट्रोलियम के उत्पादित पदार्थ भारत तथा अन्य देशों से धातुएँ, मैंगनीज, अभ्रक, टिन, अन्य खनिज पदार्थ, रबड़, चाय, जूट

Nisha

और जूट के सामान, कपास, सूती वस्त्र, माँस ऊन, नारियल, वनस्पति तेल, चमड़ा, और खालें, सागवान लकड़ी, चाँदी, मसाले, आदि होते हैं। यूरोप से आने वाले माल में लौह-इस्पात, मशीनें, रेलवे का सामान, मोटरगाड़ियाँ, रासायनिक पदार्थ, उर्वरक, वस्त्र, मोटरकार तथा विविध प्रकार की निर्मित सामग्री होती है।

इस नहर का सबसे बड़ा दोष यह है कि यह मरुस्थलीय भागों में से होकर जाती है। इसलिए इस नहर से बार-बार बालू निकालकर गहरा करने का कार्य करते रहना पड़ता है, तब जाकर इसका उपयोग पूरे वर्ष हो पाता है।